मेटामॉर्फोसिस

(कायांतरण)



फ्रेंज़ काफ़्का

अनुवाद- डॉ. परितोष मालवीय

मेटामॉर्फोसिस

(कायांतरण)

फ्रेंज़ काफ़्का

भूमिका

फ्रैंज़ काफ़्का का शुमार बीसवीं सदी के बड़े उपन्यासकारों में होता है। बीसवीं सदी के दूसरे और तीसरे दशक में काफ़्का की रचनाओं ने पश्चिमी जगत में हलचल मचा दी थी। उनकी रचनाओं का दुनिया की अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया, जिसे विश्वभर के पाठकों ने हाथों-हाथ लिया था। मेटामॉर्फोसिस उनकी प्रतिनिधि रचनाओं में से एक है, जो वर्ष 1915 में प्रकाशित हुई थी। इस क्लासिक उपन्यास को बीसवीं सदी के महत्वपूर्ण फिक्शन उपन्यासों में से एक माना जाता है तथा इसे पश्चिमी जगत के कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था।

'मेटामॉर्फोसिस', ग्रेगर साम्सा नामक एक ऐसे सेल्समैन की कहानी है, जो अचानक एक सुबह बड़े से कीड़े में तब्दील हो जाता है। अचानक हुए इस शारीरिक कायापलट (मेटामॉर्फोसिस) का उस सेल्समैन के जीवन पर क्या असर पड़ता है? किस तरह उसके माता-पिता-बहन का व्यवहार उसके प्रति बदलता है? किस तरह उसके परिवार को इस परिस्थिति का सामना करना पड़ता है? मानवीय भावनाएं किस तरह स्वार्थ के द्वारा संचालित होती हैं... इत्यादि का वर्णन इस उपन्यास की विषय वस्तु है।

इस उपन्यास को काफ़्का के निजी जीवन से जोड़कर भी देखा जाता है। नैराश्य से भरी इस दुनिया के मकड़जाल में फंसे इंसान की व्यथा को काफ़्का की रचनाओं में प्रमुखता से उभारा गया है। इस उपन्यास के नायक ग्रेगर साम्सा के जीवन की परिस्थितियां इतनी जटिल और नाटकीय हैं कि उसका सारा जीवन ही संघर्षों और टूटे हुए सपनों की गाथा बनकर रह जाता है और अंत में उसके पास मृत्यु के सिवाय और कोई चारा नहीं रहता।

काफ़्का की अनूठी लेखन शैली का परिचय हमें इस उपन्यास में देखने को मिलता है। किसी मनुष्य के कीड़े के रूप में बदल जाने जैसी नितांत असंभव घटना का वर्णन होने के बावजूद पाठकों को इस उपन्यास का कथानक असल जीवन से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है, इसीलिए पाठक इस उपन्यास में छुपे गूढ़ निहितार्थ को तलाशने की कोशिश करता है। 'मेटामॉर्फोसिस' को फ्रैंज़ काफ़्का की आत्मकथात्मक कृति भी माना जाता है, क्योंकि इसके कुछ अंश उनके निजी जीवन से मेल खाते हैं। यह कहा जाता है कि फ्रैंज़ काफ़्का अपने गुस्सैल और रौबीले पिता के समक्ष स्वयं को किसी कीड़े की तरह ही महसूस करते थे और उनसे बात करते समय हकलाया करते थे। ऐसा ही कुछ इस उपन्यास के मुख्य पात्र ग्रेगर के साथ होता है। इस उपन्यास की बुनावट ऐसी है कि इसे पढ़ते समय पाठकों का ध्यान मानव जीवन की विषमताओं, अपने अस्तित्व को बचाए रखने में होने वाले संघर्षों, आधुनिक जीवन शैली की कृत्रिमता एवं व्यवस्था की अमानवीयता की ओर बरबस ही चला जाता है। संभवतः इन्हीं विशेषताओं के चलते 'मेटामॉर्फोसिस' को विश्व इतिहास में क्लासिक उपन्यास का दर्जा प्राप्त है।

1

एक सुबह, जब ग्रेगर साम्सा अपने डरावने स्वप्न से जागा, तो उसने पाया कि वह अपने बिस्तर में एक दैत्याकार कीड़े के रूप में बदल गया है। वह अपनी कठोर खोल वाली पीठ के बल लेटा हुआ था और जैसे ही उसने अपना सिर थोड़ा सा ऊपर उठाया, उसे अपना भूरे रंग का पेट दिखायी दिया जो कि समान खंडों में विभाजित था। चादर उसके शरीर को मुश्किल से ही ढंक पा रही थी और किसी भी पल सरक सकती थी। उसने देखा कि उसके पैर, जो बाक़ी शरीर की तुलना में दयनीय रूप से पतले थे, असहाय से हिल-डुल रहे थे।

'ये मुझे क्या हो गया है?', उसने सोचा। यह कोई सपना नहीं था। उसके कमरे में सन्नाटा पसरा हुआ था, जो कि छोटा होने के बावजूद किसी मनुष्य के लिए पर्याप्त था। मेज़ पर जाने-पहचाने से कपड़े के कुछ टुकड़े रखे हुए थे। साम्सा एक सेल्समैन था, जो घूम-घूमकर सामान बेचा करता था। मेज़ के ऊपर एक तस्वीर टंगी हुई थी, जिसे उसने हाल ही में एक सचित्र पत्रिका से काटकर, एक सुंदर से फ्रेम में मढ़वाया था। यह फर की टोपी और गुलबंद

पहने हुए एक महिला की तस्वीर थी, जो कि फर का गट्ठर इस तरह उठाये हुए थी, कि उसकी निचली भुजा गट्ठर में छुप गयी थी।

इसके बाद ग्रेगर की नज़र उमस भरे मौसम में खिड़की की ओर गयी। धातु की बनी खिड़की की चौखटों पर टकराती बारिश की बूंदों का स्वर आसानी से सुना जा सकता था, जिसने उसे काफ़ी उदास कर दिया था। उसने सोचा कि, 'क्यों न मैं थोड़ी देर और सो लूँ और यह दुःस्वप्न भूल जाऊँ।' लेकिन ऐसा करने में वह पूरी तरह असमर्थ था, क्योंकि उसे दायीं करवट सोने की आदत थी, और फ़िलहाल वह करवट लेने में असमर्थ था। जैसे ही वह दायीं ओर करवट लेने का प्रयास करता, लुढ़ककर वापस उसी स्थिति में आ जाता। उसने सैकड़ों बार करवट लेने का प्रयास किया, पर सफल न हुआ। उसने अपनी आँखों को बंद कर लिया ताकि उसे अपने फड़फड़ाते हुए पैर न दिखायी पड़ें। वह तब तक करवट लेने का प्रयास करता रहा, जब तक कि उसे हल्का दर्द नहीं महसूस होने लगा। उसने पहले कभी ऐसे दर्द का अनुभव नहीं किया था।

'हे भगवान', उसने सोचा, 'मैंने भी कैसा रोज़गार चुना है! दिन-रात यात्रायें ही यात्रायें। अपने घर पर बैठकर व्यापार करने की तुलना में इस तरह घूम-घूमकर धंधा करना कहीं अधिक कठिन है। इसके अलावा यात्रा से जुड़ी तमाम समस्याएं, समय से ट्रेन पकड़ने की चिंता, अनियमित और ख़राब भोजन, हर समय अलग-अलग लोगों से मिलना और किसी एक के साथ भी मित्रता या संबंधों में प्रगाढ़ता न हो पाना आदि... सब कुछ बहुत बुरा है।' उसे अपने पेट पर हल्की सी खुजली महसूस हुई। उसने धीरे से अपनी पीठ को बिस्तर पर टिका दिया ताकि वह अपने सिर को बेहतर तरीके से

उठा सके और उस खुजली वाली जगह को देख सके; उसे खुजली वाली जगह पर बहुत से छोटे-छोटे सफेद धब्बे नज़र आये। वह नहीं जानता था कि इसका क्या करना है; और जब उसने अपने एक पैर से उस जगह को स्पर्श करने का प्रयास किया तो उसके पूरे शरीर में सिहरन दौड़ गयी। जल्दी से उसने अपना पैर उस जगह से हटा लिया।

वह फिर से अपनी पूर्व अवस्था में आ गया। उसने सोचा, 'हर समय जल्दी सोकर उठना आदमी को सनकी बना देता है। आदमी को हर हाल में अपनी नींद पूरी करनी ही चाहिए। अन्य सेल्समैन मौज मस्ती का जीवन व्यतीत करते हैं। मैं जब भी सुबह के समय कॉन्ट्रैक्ट की कॉपी लेने गेस्टहाउस जाता हूँ, तो वे सभी मुझे नाश्ता करते हुए मिलते हैं। अगर मैं अपने बॉस के साथ ऐसा करने की कोशिश करता हूँ, तो तत्काल मुझे वहाँ से बाहर भगा दिया जाता है। क्या पता, वास्तव में यहीं मेरे लिए सबसे अच्छी चीज़ हो। यदि मुझे अपने माता-पिता की परवाह न होती तो मैं अपने बॉस के पास जाकर उसे वह सारी बातें कहता, जो मैं सोचता हूँ और जैसा मैंने बहुत समय पहले अपने नोटिस में लिखा था। मैं चाहता हूँ कि वे जानें कि मैं कैसा महसूस करता हूँ। मेरी बातें सुनकर वह अपने डेस्क पर उछल जाता! एक ऊँची सी डेस्क पर बैठकर दूर से ही अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से बात करना अपने आप में एक अजीब बात है। यह समस्या उस समय और भी जटिल हो जाती है, यदि बॉस को ऊँचा सुनायी देता हो। खैर, अभी भी कुछ आशा बाक़ी है; जैसे ही मेरे पास अपने माता-पिता के कर्ज़ को उतारने लायक़ रुपया इकट्ठा हो जाता है - शायद अगले पांच या छह साल में - तो मैं यक़ीनन ऐसा ही करूँगा। तभी मैं अपने जीवन में कोई

बड़ा परिवर्तन कर पाऊँगा। पर सबसे पहले तो मुझे बिस्तर पर से उठना है। मेरी ट्रेन सुबह पाँच बजे छूटती है।'

उसने फर्नीचर के दराज़ के पास रखी अलार्म घड़ी पर नज़र डाली और मन ही मन बोला - 'हे भगवान'। साढ़े छः बज चुके थे, बल्कि पौने सात बजने वाले थे। क्या अलार्म नहीं बजा? उसने बिस्तर पर लेटे हुए ही देखा कि अलार्म को ठीक चार बजे के लिए सैट किया गया था, जैसा कि अमूमन वह करता है।... यह ज़रूर बजा होगा। लेकिन क्या ऐसा संभव है कि जिस अलार्म के शोर से फर्नीचर तक हिल जाए, वह अलार्म उसे सुनायी न दिया हो? यह सच है कि उसे चैन की नींद नहीं आयी थी, लेकिन ज़ाहिर तौर पर वह इतनी गहरी नींद में था कि अलार्म नहीं सुनायी दिया। अब वह क्या करेगा? अगली ट्रेन सुबह सात बजे छूटती है। यदि उसे यह ट्रेन पकड़नी है, तो पागलों की तरह भागना होगा। कपड़ों के नमूने भी ठीक से पैक नहीं हैं, और वह तरोताज़ा भी महसूस नहीं कर रहा। यदि किसी तरह वह सात बजे की ट्रेन पकड़ भी ले, तब भी उसे बॉस के गुस्से का सामना तो करना ही पड़ेगा, क्योंकि उसकी उपस्थिति दर्ज करने वाले कर्मचारी ने बहुत पहले ही बॉस को यह बता दिया होगा कि ग्रेगर सुबह पाँच बजे की ट्रेन नहीं पकड़ पाया है। उपस्थिति लगाने वाला कर्मचारी, बॉस का पक्का चमचा था, बेगैरत और बेवकूफ़। अगर वह बीमार होने की सूचना दे तो कैसा रहे? लेकिन यह बेहद शर्मनाक और संदेहास्पद होगा, क्योंकि पिछले पंद्रह सालों की सेवा में ग्रेगर ने एक बार भी बीमारी का बहाना नहीं किया था। उसका बॉस निश्चित रूप से स्वास्थ्य बीमा कंपनी से डॉक्टर के साथ उसे घर पर देखने आएगा और उसके माता-पिता को खरी खोटी सुनाएगा कि उनका बेटा ग्रेगर कितना

आलसी व्यक्ति है। इसके अलावा वह डॉक्टर की बात मानते हुए उसे किसी भी तरह का भत्ता भी प्रदान नहीं करेगा। वैसे भी कंपनी का डॉक्टर हमेशा यही मानता है कि कोई भी सेल्समैन कभी बीमार नहीं पड़ता, बल्कि सभी सैल्समैन आलस्य और मक्कारी के चलते बीमार होने का बहाना बनाते हैं। इसके अलावा, क्या मेरे मामले में डॉक्टर पूरी तरह से ग़लत होंगे? वास्तव में, एक लंबी और गहरी नींद के बाद महसूस होने वाले उनींदेपन के अलावा, ग्रेगर को और कोई समस्या नहीं है और उसे सामान्य दिनों की तुलना में ज़्यादा तेज़ भूख महसूस हो रही है।

बिस्तर छोड़ने के बारे में कोई निर्णय लेने के बजाए वह जल्दी-जल्दी यह सब सोच रहा था। घड़ी में पौने सात बज रहे थे। तभी उसे अपने सिरहाने की ओर वाले दरवाज़े पर एक दस्तक सुनायी दी। 'ग्रेगर', किसी ने पुकारा - यह उसकी मां की आवाज़ थी - 'सात बजने वाले हैं। तुम्हें जाना नहीं है?' ग्रेगर ने जब इसका उत्तर दिया तो वह अपनी ही आवाज़ को सुनकर भौचक्का रह गया। कैसी कोमल आवाज़ है! यह उसकी स्वाभाविक और पहले जैसी आवाज़ नहीं थी। उसकी आवाज़ के साथ एक अजीब तरह का किकियाने का स्वर उभर रहा था। उसके मुँह से निकले प्रत्येक शब्द के बाद एक अनियंत्रित गूंज सुनायी देती थी, जिससे सुनने वाला समझ ही नहीं सकता था कि ग्रेगर आख़िर कहना क्या चाहता है। ग्रेगर विस्तार से उत्तर देना चाहता था और सब कुछ समझाना चाहता था, लेकिन मौजूदा हालत में वह यही कह पाया 'हाँ, माँ... धन्यवाद। मैं बस उठ ही रहा हूँ।' ग्रेगर की आवाज़ में आए बदलाव पर लकड़ी के दरवाज़े के उस ओर खड़ी माँ का ध्यान ही नहीं गया और वे उसके जबाव से संतुष्ट होकर आगे बढ़ गयीं।

लेकिन उनकी इस छोटी सी बातचीत के कारण परिवार के अन्य सदस्यों को यह पता चल गया कि ग्रेगर आज घर पर ही है, और इसकी उन्हें कोई अपेक्षा नहीं थी। जल्द ही उसके पिता ने दरवाज़े पर दस्तक दी – 'ग्रेगर, ग्रेगर... क्या बात है?'; और कुछ देर के बाद उन्होंने फिर से थोड़ी तेज़ आवाज़ में पुकारा, 'ग्रेगर!, ग्रेगर!'। दूसरी ओर से उसकी बहन ने हल्के से दस्तक दी, 'ग्रेगर? तुम ठीक तो हो? तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है क्या?'। ग्रेगर ने बड़ी सावधानी के साथ अपने उच्चारण पर ध्यान देते हुए दोनों दिशाओं में उत्तर दिया, 'मैं तैयार हो गया हूँ।' उसके पिता नाश्ते की मेज़ पर वापस लौट गए। हालांकि, उसकी बहन धीरे से फुसफुसायी, 'ग्रेगर, दरवाज़ा खोलो, मैं विनती करती हूँ।' ग्रेगर का दरवाज़ा खोलने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन उसने इस बात के लिए खुद को शाबासी दी कि यात्राओं पर रहने के कारण उसे कमरे का दरवाज़ा ठीक से बंद करके सोने की आदत हो गयी है... भले ही वह अपने घर का दरवाज़ा ही क्यों न हो।

सबसे पहला काम जो वह करना चाहता था, वह था बिना किसी शोरगुल के बिस्तर से उठना, तैयार होना और नाश्ता करना। उसके बाद ही वह आगे कोई विचार करना चाहता था। वह यह बात अच्छी तरह से जानता था कि बिस्तर पर पड़े-पड़े वह किसी उचित निष्कर्ष पर नहीं पहुंचेगा। उसे याद आया कि उसे पहले भी अक़्सर बिस्तर पर एक हल्का सा दर्द महसूस होता था। ऐसा शायद ग़लत तरीक़े से लेटने के कारण होता था। लेकिन जैसे ही वह खड़ा होता था, यह दर्द पूरी तरह से गायब हो जाता था। वह यह देखने के लिए उत्सुक था कि उसका आज का दर्द किस तरह धीरे-धीरे गायब होगा। उसे इस बात में लेशमात्र भी संदेह नहीं था कि उसकी

आवाज़ में आया बदलाव कुछ और नहीं बल्कि सर्दी लगने के कारण है और ऐसा यात्रा में रहने वाले सेल्समैनों के साथ अक्सर होता है।

कंबल को एक तरफ फेंकना बहुत आसान था; अपने आप को थोड़ा सा हिलाने-डुलाने भर से ही कंबल एक ओर सरक जाता। लेकिन असामान्य रूप से चौड़ा हो जाने के कारण अब ऐसा करना कठिन था। अपनी हथेलियों और भुजाओं के इस्तेमाल से वह आसानी से स्वयं को सीधा खड़ा कर सकता था; पर अब उसके पास बहुत से छोटे-छोटे पैर थे, जो लगातार अलग-अलग दिशाओं में हिल-डुल रहे थे और वह उन्हें नियंत्रित करने में असमर्थ था। यदि वह किसी तरह उनमें से एक पैर को मोड़ने का प्रयास करता, तो बाक़ी पैर आजाद होकर इधर-उधर हिलने लग जाते थे और तेज़ दर्द होता था। 'बिस्तर पर लेटे हुए ऐसा कर पाना संभव नहीं है। अतः मुझे ऐसे प्रयास बंद कर देने चाहिए', ग्रेगर ने स्वयं से कहा।

सबसे पहले वह अपने शरीर के निचले हिस्से को चारपाई से नीचे उतारना चाहता था, लेकिन संयोगवश उसने ऐसे निचले हिस्से को न तो आज तक देखा था और न ही कभी कल्पना की थी; ऐसे में उसका बिस्तर से हिल पाना बहुत कठिन साबित हो रहा था; उसने धीरे-धीरे कोशिश करना जारी रखा; और अंततः किसी उन्मादी की तरह उसने पूरी ताक़त जुटाते हुए अपने शरीर को एक धक्का सा दिया। दुर्भाग्यवश उसने ग़लत दिशा चुन ली और वह चारपाई के पाये पर ज़ोर से टकराया। पाये से टकराने पर हुए भयंकर दर्द से उसे यह समझ में आ गया कि उसके शरीर का निचला हिस्सा शायद सबसे अधिक नाजुक है।

इसके बाद उसने अपने शरीर के ऊपरी हिस्से को चारपाई से बाहर निकालने की कोशिश की और उसने अपना सिर सावधानीपूर्वक एक ओर घुमाया। वह आसानी से ऐसा करने में सफल रहा और अपने शरीर के वजन और चौड़ाई के बावजूद उसका शरीर सिर की दिशा में आसानी से मुड़ गया। लेकिन अंत में जैसे ही उसने अपने सिर को चारपाई के बाहर हवा में निकाला, उसे यह समझ आ गया कि इस तरह तो वह गिर जाएगा और कोई चमत्कार ही उसके सिर को घायल होने से बचा सकता है। फलस्वरूप उसने अपने शरीर को इस तरह धक्का देना बंद कर दिया। वह किसी भी कीमत पर इस तरह होश खोना नहीं चाहता था, इसलिए उसने बिस्तर में ही बने रहना पसंद किया।

उसे बिस्तर पर अपनी पहले वाली अवस्था में आने के लिए भी उतना ही श्रम करना पड़ा, जब वह अपनी पूर्व अवस्था में पहुँच गया तो एक बार फिर से उसने अपने पैरों को पहले की तुलना में अधिक तेज़ी से एक-दूसरे को रगड़ते हुए देखा। इस अवस्था में उसकी मानसिक उलझन शांत नहीं हो सकती थी। उसने स्वयं से कहा कि इस तरह वह बिस्तर पर पड़ा नहीं रह सकता है और किसी भी कीमत पर उसे इस बिस्तर को त्यागना ही होगा। वह इसके लिए कोई भी कुर्बानी देने को तैयार है। लेकिन उसी समय वह स्वयं को यह याद दिलाना भी नहीं भूलता कि ठंडे दिमाग से निकाले गए निष्कर्ष हड़बड़ाहट में लिए गए निर्णयों से बेहतर होते हैं। ऐसे क्षणों में, उसने किसी तरह खिड़की की ओर देखा। वह खिड़की के उस पार के दृश्य को देखना चाहता था लेकिन दुर्भाग्यवश सुबह की धुंध के चलते उसे कुछ नज़र नहीं आया। इस धुंध भरे नजारे को देखकर उसे थोड़ी सी आश्वस्ति हुई। जैसे ही घड़ी का

स्वर दोबारा सुनाई दिया, उसने स्वयं से कहा, 'सात बज चुके हैं, पर अभी भी इतना कोहरा है।' वह थोड़ी देर तक यूं ही चुपचाप लेटा रहा, जैसे कि वह इस विकट स्थिति से बाहर निकलने और अपनी प्राकृतिक अवस्था में आने के लिए चारों ओर सन्नाटा होने का इंतज़ार कर रहा हो।

लेकिन फिर उसने स्वयं से कहा, 'चाहे कुछ भी हो जाये, सवा सात बजे के पहले मुझे हर हाल में बिस्तर को छोड़ देना है। तब तक ऑफ़िस का कोई न कोई कर्मचारी मेरे बारे में पूछताछ करने के लिए पहुंच ही जाएगा, क्योंकि ऑफ़िस सात बजे से पहले खुलता है।' फिर उसने अपने पूरे शरीर को एक साथ बिस्तर से बाहर निकालने का प्रयास किया। यदि वह स्वयं को इस तरह से चारपाई से गिरने देता है और अपना सिर उठाये रखता है, तो वह चोट से बच सकता है। उसकी पीठ पर्याप्त कठोर लग रही थी और कालीन पर पीठ के बल गिरने से चोटिल होने की संभावना बहुत कम होगी। उसे चोट से ज़्यादा चिंता चारपाई से गिरने के कारण होने वाली आवाज़ की थी, जो कि दरवाज़े के उस पार जा सकती थी और घर में मौजूद लोगों को चिंतित कर सकती थी। पर उसे ये जोखिम तो उठाना ही पड़ेगा।

जब ग्रेगर स्वयं को बिस्तर से आधा बाहर निकाल चुका था - बिस्तर छोड़ने का उसका ये नया तरीक़ा, प्रयास कम और खेल अधिक था - उसे यह लगा कि यदि कोई उसकी मदद के लिए मौजूद हो तो सबकुछ कितना आसान हो जाएगा। उसे बिस्तर से निकालने के लिए दो ताक़तवर लोग (उसके पिता और घरेलू सेविका) ही पर्याप्त होंगे। उन्हें अपने हाथों से बस उसे पीठ की

ओर से थोड़ा सा सहारा देना है और उसे आगे झुकाने में सहायता करनी है ताकि वह आसानी से फर्श की ओर झूल जाये, बाक़ी काम उसके छोटे-छोटे पैर संभाल लेंगे। दरवाज़े तो अंदर से बंद हैं, फिर भी क्या उसे मदद के लिए पुकार लगानी चाहिए? तमाम संकटों के बावजूद, वह अपने मन में आये इस विचार पर मुस्कुराने लगा।

वह पहले ही उस स्थिति में पहुंच चुका था, जहां से उसे अपना संतुलन बनाए रखने में कठिनाई हो रही थी। घड़ी में सात बजकर दस मिनट हो रहे थे और उसे जल्दी से अंतिम निर्णय लेना था कि उसे आख़िर क्या करना है। तभी किसी ने घर के दरवाज़े की घंटी बजायी। 'ज़रूर कोई ऑफ़िस से आया होगा', उसने स्वयं से कहा, और एकदम जड़वत हो गया, यद्यपि उसके छोटे-छोटे पैर उत्तेजना के कारण तेज़ी से हरकत करने लगे। एक पल के लिए सब कुछ शांत रहा। 'वे दरवाज़ा नहीं खोल रहे हैं', ग्रेगर ने किसी बेतुकी उम्मीद में स्वयं से कहा। लेकिन कुछ ही समय बाद घरेलू सेविका के मज़बूत पदचाप दरवाज़े की ओर जाते हुए सुनाई दिए और उसने दरवाज़ा खोल दिया। आगंतुक की आवाज़ सुनते ही ग्रेगर ने पहचान लिया कि दरवाज़े पर कोई और नहीं, बल्कि कंपनी का मैनेजर है।

ग्रेगर को ऐसी कंपनी में काम करने की क्या ज़रूरत है, जिसमें थोड़ी सी चूक होने पर ही कर्मचारी पर शक किया जाता हो? क्या कंपनी के सारे कर्मचारी बदमाश हैं? क्या उनका एक भी कर्मचारी ऐसा नहीं है जिस पर शक न किया जा सके? किसी को ऑफ़िस आने में ज़रा सी देर होने पर आसमान सिर पर उठाने की क्या ज़रूरत है? क्या किसी छोटे कर्मचारी को पूछताछ करने के लिए नहीं भेजा जा सकता था? मैनेजर को स्वयं आने की क्या ज़रूरत

है? क्या कर्मचारी के निर्दोष परिवार को यह जताना आवश्यक है कि केवल मैनेजर स्तर का अधिकारी ही इस संदेहास्पद मामले की पड़ताल कर सकता है? मन में उठ रहे इन सारे प्रश्नों के चलते कोई निर्णय न ले पाने के कारण ग्रेगर ने एकाएक स्वयं को चारपाई से उठाने के लिए ज़ोर से झटका दिया।

यह कोई तेज़ आवाज़ न होकर एक थपकी भर थी। कालीन पर गिरने से आवाज़ कुछ धीमी हो गयी। इसके अलावा, उसकी पीठ अपेक्षा से अधिक लोचदार थी, जिसके चलते आवाज़ दब कर रह गयी और किसी का ध्यान नहीं गया। चारपाई से गिरते समय उसने अपने सिर को ठीक तरह से नहीं संभाला था, इसलिए उसे सिर में हल्की सी चोट भी आयी। उसने खिसियाकर अपना सिर घुमाया और कालीन पर रगड़ दिया।

'वहाँ कुछ गिरा है', बायीं ओर के कमरे में मौजूद मैनेजर ने कहा। ग्रेगर सोचने लगा कि जैसा आज उसके साथ हुआ है, क्या कभी मैनेजर के साथ भी हो सकता है; ऐसा बिल्कुल मुमकिन है। तभी बगल के कमरे से मैनेजर के अच्छी तरह से पॉलिश रहने वाले जूतों की पदचाप सुनायी दी। दाहिनी ओर के कमरे से ग्रेगर की बहन धीरे से फुसफुसाकर बोली, 'ग्रेगर, मैनेजर साहब आये हैं'। 'मुझे पता है', ग्रेगर ने इतनी धीमी आवाज़ में अपने आप से कहा कि उसकी बहन को शायद ही सुनायी दिया हो।

अब उसके पिता ने बाईं ओर के कमरे से आवाज़ दी, 'ग्रेगर!, मैनेजर साहब आये हैं और जानना चाहते हैं कि आज तुमने तड़के सुबह की ट्रेन क्यों नहीं पकड़ी? मुझे समझ नहीं आ रहा है कि हम उन्हें क्या उत्तर दें। और वे तुमसे व्यक्तिगत रूप से भी बात

करना चाहते हैं। इसलिए तुरंत दरवाज़ा खोलो। मुझे उम्मीद है कि वे तुम्हारे कमरे में फैली गंदगी पर ध्यान नहीं देंगे।' इसी बीच मैनेजर ने दोस्ताना अंदाज में कहा, 'गुड मॉर्निंग, मिस्टर साम्सा'। उसकी माँ ने मैनेजर को बीच में टोकते हुए कहा 'उसकी तबीयत ठीक नहीं है'। जबकि उसके पिता दरवाज़े पर ही बात करते रहे, 'आप मेरा विश्वास कीजिये, उसकी तबीयत ठीक नहीं है। अन्यथा वह क्यों ट्रेन छोड़ता। वह हर समय केवल व्यापार के ही बारे में सोचता रहता है। कभी कभार तो मैं ही उससे नाराज़ होता हूँ कि वह शाम को भी बाहर नहीं जाता। वह पिछले एक सप्ताह से शहर में है, लेकिन हर शाम वह घर पर ही होता है। वह हमारे साथ किचन में बैठता है और चुपचाप अख़बार या रेल्वे टाइम-टेबल ही पढ़ता रहता है। ख़ाली समय में वह पतली सी आरी से लकड़ी के टुकड़े काटता रहता है। यही उसका टाइमपास करने का तरीक़ा है। उसने सिर्फ़ दो या तीन शामों में ही इस छोटे से फ्रेम को बना दिया है। आपको देखकर आश्चर्य होगा कि उसने इसे कितना सुंदर बनाया है; यह फ्रेम ग्रेगर के कमरे में लटका हुआ है; जैसे ही वह दरवाज़ा खोलेगा, आपको फ्रेम दिखायी दे जाएगा। वैसे मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि आप मेरे घर आये हैं। कई बार हम लोग भी ग्रेगर के कमरे का दरवाज़ा नहीं खुलवा पाते; वह बहुत ज़िद्दी है; और मुझे लगता है कि ज़रूर उसकी तबीयत ठीक नहीं है, हालांकि सुबह वह इससे इनकार कर रहा था'। ग्रेगर ने जानबूझकर धीरे से कहा, 'मैं अभी आ रहा हूँ'। वह उनके बीच हो रही बातचीत को अच्छी तरह से सुनना चाहता था। इसी बीच मैनेजर बोला - 'मैडम, मैं आपसे घुमाफिराकर बात नहीं करूँगा। मुझे उम्मीद है कि वह गंभीर रूप से बीमार नहीं होगा। मैं यह भी कहना चाहता हूँ

कि हम लोग बिज़नेसमैन हैं, दुर्भाग्यवश जब भी कोई बीमार पड़ता है, तो हमें व्यावसायिक कारणों से जल्दी स्वस्थ होना ही पड़ता है।'

ग्रेगर के पिता ने अधीरतापूर्वक दरवाज़ा खटखटाते हुए पूछा – 'क्या मैनेजर अब तुमसे मिलने कमरे में आ सकते हैं?' ...'नहीं...अभी नहीं', ग्रेगर ने उत्तर दिया। उसके बायीं ओर के कमरे में सन्नाटा पसर गया, जबकि दाहिनी ओर के कमरे से बहन के सिसकने की आवाज़ आयी।

मेरी बहन वहाँ क्यों नहीं गई? शायद वो अभी सोकर उठी है और उसने अपने कपड़े नहीं बदले होंगे। लेकिन वह रो क्यों रही है? कहीं इसलिए तो नहीं कि मैं अब तक बिस्तर से नहीं उठा हूँ और मैनेजर को अपने कमरे में नहीं आने दे रहा हूँ; या फिर इसलिए कि मेरी नौकरी जाने का ख़तरा है और यदि ऐसा हुआ तो मेरा बॉस अपनी पुरानी बातों को लेकर फिर से मेरे माता-पिता को बदनाम करेगा? फ़िलहाल इस तरह की चिंतायें करना व्यर्थ था। ग्रेगर के मन में कई विचार चल रहे थे। अपने परिवार को छोड़ने का उसका कोई इरादा नहीं था।

फ़िलहाल वह कालीन पर लेटा हुआ था, और ऐसा कोई भी व्यक्ति जो उसकी हालत जानता हो, यह अपेक्षा नहीं कर सकता था कि वह ऐसी स्थिति में मैनेजर को कमरे में आने की इजाज़त देगा। फ़िलहाल यह छोटी सी बेअदबी थी जिसके लिए बाद में बहाना बनाकर माफ़ी मांगी जा सकती थी। लेकिन इस वजह से ग्रेगर को नौकरी से बर्ख़ास्त नहीं किया जा सकता था। फ़िलहाल ग्रेगर को ऐसा लग रहा था कि उससे बातचीत करके या रो-धोकर परेशान करने के बजाय उसे एकांत में छोड़ देना ही बेहतर है। लेकिन

परिवार के अन्य लोगों को उसकी हालत के बारे में काई जानकारी नहीं थी, ऐसे में उनका चिंतित होना स्वाभाविक था।

मैनेजर ने ऊँची आवाज़ में कहा, 'मिस्टर साम्सा!, क्या बात है? आपने स्वयं को कमरे में बंद क्यों किया हुआ है? केवल हां या ना में जवाब दें। आपने अपने माता-पिता को बेवजह चिंता में डाल दिया है और मैं न चाहते हुए भी यह कहना चाहता हूँ कि तुमने अपनी कंपनी के व्यावसायिक हितों की भी अनदेखी की है। तुमने ऐसा पहले कभी नहीं किया था। मैं यहाँ तुम्हारे माता-पिता और कंपनी नियोक्ता की ओर से बोल रहा हूँ, और इस बारे में मैं तुमसे तत्काल स्पष्टीकरण चाहता हूँ। तुम्हारे इस व्यवहार को लेकर मैं वास्तव में बहुत आश्चर्यचकित हूँ। मैं तुम्हें एक शांत और जिम्मेदार व्यक्ति समझता था, पर आज अचानक तुम बड़ा अजीब सा व्यवहार कर रहे हो। आज सुबह ही कंपनी के मालिक मुझसे तुम्हारी अनुपस्थिति का कारण पूछ रहे थे - उन्हें लगा कि शायद तुम इसलिए काम पर नहीं आये हो क्योंकि तुम्हें कंपनी के लिए नकद धन उगाही का काम सौंपा गया है - मैं उन्हें अपनी ओर से यह आश्वासन देकर आया हूँ कि उनका ऐसा सोचना सही नहीं है। लेकिन अब जो मैं तुम्हारा यह ज़िद्दी व्यवहार देख रहा हूँ, उसके बाद अपनी ओर से मैं तुम्हारा कोई पक्ष नहीं लूँगा। न ही कंपनी में तुम्हारी स्थिति सुरक्षित है। पहले मैंने सोचा था कि ये सब बातें तुमसे अकेले में कहूँगा, लेकिन जिस तरह से तुम मेरा समय बर्बाद कर रहे हो, उसे देखकर मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे माता-पिता से कोई बात छुपानी चाहिए। पिछले कुछ समय से तुम्हारा प्रदर्शन संतोषजनक नहीं रहा है। बेशक, मैं मानता हूँ कि साल का यह समय व्यवसाय की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं होता, पर ऐसा भी

मेटामोर्फोसिस (पूरी कहानी)

यह एक आदमी की कहानी जो एक सुबह कोक्क्रोज जैसा जीव बन जाता है। इससे उसके और उसके परिवार के जीवन पर क्या असर पड़ता है। पढ़िए फ्रेंज काफ्का के इस विचित्र उपन्यास में।

ग्रेगर एक सेल्समेन था जो घर -घर घूम कर कंपनी के प्रोडक्ट्स बेचा करता था। एक सुबह जब वह उठता है तो देखता है कि वह कोक्क्रोज जैसे एक बड़े कीड़े में बदल गया है।

वह अपने कमरे को देखता है। वहाँ कुछ भी नहीं बदला था। वह अपने परिवर्तन को बुरा सपना मानकर फिर से सोने की कोशिश करता है।

तभी वह करवट बदलने की कोशिश करता है लेकिन ऐसा करने में असफल होता है। क्योंकि उसकी पीठ कोक्क्रोज की तरह उभरी हुई हो गयी थी। फिर वह अपने पेट को खुजलाने लगता है। वह देखता है कि उसकी कई टाँगे निकल आयी थी। यह देखकर वह भयभीत हो जाता है।

इसके बाद वह लेटे - लेटे अपनी जिंदगी के बारे में सोचने लगता है। वह सोचता है कि उसकी सेल्समेन की जिंदगी भी कोई जिंदगी है। वह इस जॉब को छोड़ना चाहता था। लेकिन उसका परिवार उसकी इनकम पर निर्भर था।

इसी बीच उसे फिर से झपकी लग जाती है। जब वह उठता है तो देखता है कि उसकी ऑफिस जाने के लिए ट्रेन पहले ही निकल चुकी थी।

तभी ग्रेगर की माँ दरवाजे को खटखटाती है। जब ग्रेगर उन्हें उत्तर देता है तो देखता है कि उसकी आवाज भी बदल चुकी थी। उसके परिवार वालों को लगता है कि ग्रेगर बीमार हो गया है। वे उसे दरवाजा खोलने के लिए कहते हैं। ग्रेगर उठने की कोशिश करता है लेकिन उठ नहीं पाता।

तभी ग्रेगर को लगता है कि उसका मैनेजर उनके घर आ गया है। और उसकी माँ से उसके बारे में पूछ रहा है। वह दरवाजे से ग्रेगर को धमकाता है कि उसके लेट होने का अच्छा परिणाम नहीं होगा। और उसके काम से वह पहले ही खुश नहीं है।

ग्रेगर कहता है कि वह बाहर आ रहा है। लेकिन उसकी आवाज कोई नहीं समझ पाता। तभी ग्रेगर कोशिश करके खुद को फर्श पर गिराता है। वह अपने मुँह से दरवाजे को खोलता है।

बाहर आकर वह मैनेजर से लेट होने के लिए सॉरी बोलता है। ग्रेगर के ऐसे रूप को देखकर सभी आश्चर्यचकित हो जाते है। मैनेजर वहाँ से भाग जाता है। ग्रेगर उसे मनाने उसके पीछे भागता है।

लेकिन उसका पिता डंडे और एक न्यूज़पेपर से उसे भगाने लगता है। ग्रेगर भागकर अपने कमरे में चला जाता है। उसका पिता दरवाजे को बंद कर देता है। भागने से ग्रेगर बहुत थक गया था और वह फिर से सो जाता है।

जब ग्रेगर उठता है तो देखता है कि उसकी बहन ने उसके लिए दूध और ब्रेड रखा था। लेकिन जैसे ही वह दूध पीता है उसे उसका टेस्ट बहुत बुरा लगता है। और वह उसे पी नहीं पाता। फिर वह सोफे के नीचे चला जाता है। और अपार्टमेंट की ख़ामोशी को सुनने लगता है।

अगली सुबह उसकी बहन ग्रेट आती है। वह देखती है कि ग्रेगर ने अपने भोजन को हाथ भी नहीं लगाया था। वह दूध और ब्रेड ले जाती है और इसके बदले सड़ा हुआ भोजन वहाँ रख देती है। ग्रेगर को वह टेस्टी लगता है।

इसके बाद यह रूटीन ही बन जाती है। उसकी बहन हर दिन उसे भोजन देती है और उसका कमरा साफ़ करती है। ग्रेगर सोफे के नीचे ही छुपा रहता था। क्योंकि उसे लगता था कहीं उसे देखकर उसकी बहन डर न जाये।

रात को वह दीवार के पास जाकर अपने घर वालों की बातें सुनता था। वे घर की आर्थिक हालत की चिंता करते थे। और अब तो ग्रेगर भी कमाता नहीं था।

उसकी माँ उससे मिलना चाहती थी। लेकिन उसके पिता और बहन उसे मिलने नहीं देते थे। उन्हें लगता था वह ग्रेगर को देखकर डर जाएँगी।

धीरे- धीरे ग्रेगर टाइम पास करने के लिए दीवारों और सीलिंग पर चढ़ने लगा। उसकी बहन ने उसे ऐसा करते देखा तो उसने वहाँ से कुछ फर्नीचर हटाने की सोची। ताकि ग्रेगर को स्पेस मिल जाये। अगले दिन वह अपनी माँ के साथ फर्नीचर हटाने लगी। तभी उसकी माँ दीवार से एक फोटो हटाने लगी। लेकिन वह ग्रेगर की फेवरेट फोटो थी।

ग्रेगर उस पर चढ़ बैठा। उसकी माँ ने उसे जैसे ही देखा वह बेहोश हो गयी। उसकी बहन ने उसे वहाँ से जाने को कहा। वह वहाँ से निकलकर किचन में चला गया।

जब ग्रेगर के पिता घर लौटे तो उन्हें लगा ग्रेगर ने अपनी माँ को चोट पहुँचायी है। उन्होंने उस पर एक सेब दे मारा। इससे ग्रेगर उल्टा हो गया। फिर किसी तरह से वह अपने कमरे में पहुँचा। लेकिन वह काफी जख्मी हो गया था।

ग्रेगर के परिवार वालों ने अब कमरे का दरवाजा खुला रखना शुरू कर दिया। ताकि वह उन्हें देख सके। ग्रेगर ने देखा कि उसके कोक्क्रोज हो जाने से उसका परिवार और गरीब हो रहा था।

उसकी बहन ग्रेट को भी अब उससे चिढ़ होने लगी थी। वह बिना इच्छा के उसे खाना खिलाती और कमरे को साफ़ करती। उन्हें अपनी मैड को भी निकालना पड़ा। और सफाई के लिए एक औरत रख ली।

इसके बाद उन्होंने तीन किरायेदार रख लिए। फालतू के फर्नीचर को ग्रेगर के कमरे में रख दिया गया। इससे ग्रेगर को बहुत दिक्कत होने लगी। उसे ग्रेट का लाया गया खाना भी पसंद नहीं आ रहा था। और उसने खाना, खाना बिलकुल बंद कर दिया।

एक दिन तीनों किरायेदार बैठक रूम में ग्रेगर के परिवार के साथ बैठे हुए थे। ग्रेट उनके लिए वायलिन बजा रही थी। तभी ग्रेगर भी वायलिन सुनने अपने कमरे से निकलकर वहाँ आ गया। उसे देखकर तीनों किरायेदार डर गए। उन्होंने कहा कि वे घर खाली कर देंगे। क्योंकि वहाँ स्वच्छता की स्थिति बहुत खराब है।

ग्रेट अपने परिवार वालों से कहती है कि उन्हें ग्रेगर से छुटकारा पाना होगा। ग्रेगर के पिता कहते हैं कि काश ग्रेगर खुद ही समझ जाए और अपने आप ही वहाँ से चला जाये। ग्रेगर यह बाते सुन लेता है और अपने रूम में चला जाता है।

इसके बाद वह मर जाता है। जब परिवार के लोग देखते हैं कि ग्रेगर मर चुका है तो वे काफी राहत महसूस करते हैं। सफाई करने वाली महिला उसके मृत शरीर को कहीं फेंक आती है।

इसके बाद वे किरायेदारों और सफाई करने वाली महिला को निकाल देते हैं। वे अपनी आर्थिक स्थिति का जायजा लेते हैं। ग्रेगर के कीड़े बन जाने से उनका काफी खर्चा बच गया था।

फिर वे एक ट्रिप पर जाते हैं। धीरे -धीरे ग्रेट सुन्दर और स्वस्थ लगने लगती है। और उसके माता -पिता उसकी शादी करने की बात करते हैं।

इस उपन्यास में ये ही कहा गया हैं की जब तक आप किसी व्यक्ति या परिवार के काम आने योग्य होते हैं, तब तक ही आपकी समाज और परिवार में वैल्यू होती हैं, जैसे ही आप अयोग्य हो जाते हैं वैसे ही ये ही समाज, परिवार सभी आपसे दूर होते चले जाते हैं चाहे आपने पूर्व में कितने ही अच्छे कार्य किये हो